

पद १६२

(राग: मारवा - ताल: एक्का)

साधक सुध सब मिल ये विचार लेहों, मायामय मन निजाग्यान
करीं बहुविधा रूप गुण, जग महाभूत अरु नाना बंध मोछ
महावाक्य साधन सकल, श्रवन मनन समाधी आतम सगुण
ध्यान ॥ध्रु.॥ तू जनन मरन भ्रमन करत, ज्ञानरूप मार्तांड कहत,
दुःख भोगनही जागे त्यागे हो पामर मदांध करत करम मानत मैं
पडत ग्यानीं जानत नहीं निगम गूढ, मानत बाधक ॥१॥